सबद (पद)

1

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

2

संतौं भाई आई ग्याँन की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँनी, माया रहै न बाँधी।।
हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।
त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा।।
जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी।
कूड़ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी।।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।
कहै कबीर भाँन के प्रगटे उदित भया तम खीनाँ।।

Scanned with CamScanner

भागीरथी बाल शिक्षा सदन सै० स्कूल

विषय - हिन्दी क्लिनिज (काव्य-खंड)

कक्षा - IX

पाठ- 9 (साखियाँ एवं सबद)

यह कार्य पाठ-9 का शेष कार्य है। अतः उसी कार्य के आगे से निम्नलिखित कार्य करें।

शब्दार्थ

1. देवल = मंदिर
2. बैराग = सन्यास लेना
3. टाटी = दरवाजा
4. हिति चित्त = मन व हृदय
5. थूनी = स्तंभ
6. त्रिस्ना = तृष्णा
7. भाँन = सूर्य
8. खीनाँ = क्षीण होना
9. पाँणी = पानी
10. बलिंडा = बल्ली

सबद

मोकों कहाँ ढूँढे बंदे, ---------- सब स्वाँसों की स्वाँस में।।

भावार्थ :- कबीरदास जी कहते हैं कि ईश्वर निराकार और घट-घट वासी है, वह प्रत्येक व्यक्ति के अंदर प्रत्येक प्राणी में व्याप्त है। उसे कहीं और खोजना व्यर्थ है। लेकिन प्रायः ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, काबा तथा कैलाश पर्वत जैसे तीर्थ स्थानों पर पूजा-पाठ कर प्राप्त करना चाहते हैं। वे लोग वैराग्य धारण कर ईश्वर को पाना चाहते हैं, पर ऐसा करने से ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। परमात्मा का वास सभी व्यक्तियों की साँसों में है। इधर उधर भटकने के स्थान पर आत्मावलोकन करने से व्यक्ति को आत्मज्ञान प्राप्त हो सकता है। वह परमात्मा की सत्ता से साक्षात्कार कर सकता है।

Scanned with CamScanner

संतों भाई आई ग्यान - - - - - - - - - - - - - - - - उदित भया तम खीनाँ ।।

भावार्थ :- कबीरदास जी कहते हैं जब गुरु के ज्ञान का प्रकाश होता है तब विषय विकार का अँधेरा दूर हो जाता है। हे संतों ! ज्ञान रूपी आँधी आ चुकी है। इस ज्ञान की आँधी से भ्रमरूपी छप्पर पूरी तरह उड़ गया है अर्थात् ज्ञान से भ्रम का समूल नाश हो गया है और सांसारिक मोहमाया का जाल तार-तार हो गया है। मोह माया के जाल में फँसे मन और चित्त का नाश हो गया है। मोह रूपी बल्ली, जिस पर भ्रमरूपी छप्पर टिका था, टूट चुकी है। शरीर रूपी घर के ऊपर पड़ा तृष्णा रूपी छप्पर ज्ञान की आँधी में उड़ गया है। अब संतों ने बड़ी युक्ति के साथ इस भ्रमरहित छप्पर को पुनः बाँधा, इस कारण इसमें से पानी नहीं टपकता, कपट, बुराइयाँ संबंधी विकार निकल जाने से यह शरीर निर्मल हो गया। आँधी के बाद वर्षा होने से सभी कुछ भीग जाता है, उसी प्रकार ज्ञान के आने से मन भगवान की भक्ति मे रम जाता है। कबीर दास जी कहते हैं जिस प्रकार सूर्य के उदित हो जाने पर अंधकार समाप्त हो जाता है ठीक उसी प्रकार ज्ञान को पहचान लेने पर अज्ञान तथा मोह माया नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न - अभ्यास (साखियाँ)

प्र० 1 -> 'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है ?

उ० -> मानसरोवर से आशय मन रूपी सरोवर से है। यह व्यक्ति के भीतर ही होता है।

प्र० 2 -> कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है ?

उ० -> सच्चा प्रेमी विष को भी अमृत बना देता है। सच्चे प्रेमी के मिलने से मन की सभी बुराइयाँ दूर हो जाती हैं। मन अमृत के समान पवित्र और निर्मल हो जाता है।

प्र० 3 -> इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है ?

उ० -> इस संसार में सच्चा संत वही है जो पक्ष - विपक्ष में पड़ने की अपेक्षा निष्पक्ष होकर ईश्वर से प्रेम करता है।

Scanned with CamScanner

प्र० 4 :- अंतिम दो दोहो के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है ?

उ० :- अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने निम्न संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है -

(i) अपने धर्म को श्रेष्ठ तथा दूसरे धर्म को निम्न कोटि का बताना।

(ii) उच्च कुल में जन्म लेकर स्वयं को श्रेष्ठ समझना और अपने कर्म की प्रकृति को महत्व न देना।

प्र० 5 :- किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उ० :- किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है, कुल से नहीं। उच्च कुल में जन्म लेकर नीच कर्म करने वाला निंदनीय माना जाता है। इसलिए व्यक्ति द्वारा अच्छे और नेक कर्म करने पर बल दिया जाता है। शराब निंदनीय मानी जाती है, चाहे उसे सोने के कलश में ही क्यों न रखा जाए।

प्र० 6 :- काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :-

हस्ती चढ़िए ज्ञान की, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि ।।

उ० :- प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने ज्ञान को हाथी की उपमा तथा लोगों की प्रतिक्रिया को स्वान (कुत्ते) का भौंकना कहा है। यहाँ रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है। यहाँ सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है, 'झख मारि' में मुहावरे का प्रयोग है।

(सबद)

प्र० 7 :- मनुष्य ईश्वर को कहाँ - कहाँ ढूँढता फिरता है ?

उ० :- मनुष्य ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, काबा, कैलाश जैसे तीर्थ - स्थलों पर ढूँढता फिरता है।

Scanned with CamScanner

प्र० ८ ! - कबीर ने ईश्वर - प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उ० लोग प्रायः ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, काबा तथा कैलाश पर्वत जैसे तीर्थ स्थलों पर पूजा पाठ करके प्राप्त करना चाहते हैं। वे कठिन योग - वैराग्य धारण कर ईश्वर को पाना चाहते हैं। कवि ने ऐसी धारणाओं का खंडन किया है।

प्र० ९ ! - कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?

उ० ! - कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' इसलिए कहा है क्योंकि ईश्वर कण-कण में व्याप्त है। वह हर प्राणी के अंदर है।

प्र० १० ! - कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

उ० ! - सामान्य हवा में वस्तुओं को प्रभावित करने की उतनी क्षमता नहीं होती जितनी आँधी में। उसी प्रकार ज्ञान की आँधी आने से मनुष्य के मन पर पड़े हुए हर एक किस्म के अज्ञान के परदे, मोहमाया, बुराई, छल-कपट सब नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य का मन निर्मल होकर प्रभु भक्ति में रम जाता है।

प्र० ११ ! - ज्ञान की आँधी का भक्त के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उ० ! - ज्ञान रूपी आँधी आने के बाद भक्त के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। भक्त के मन में स्थित सभी स्वार्थ ही नष्ट हो जाते हैं। भ्रम के सभी छप्पर टूट जाते हैं, जिसे सांसारिक मोहमाया ने बाँध रखा था। ऐसा होने पर भक्त का मन निर्मल हो जाता है।

प्र० १२ ! - भाव स्पष्ट कीजिए ! - (गृह - कार्य)

क) हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा टूटा।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जना भींनाँ।

प्र० १३ ! - काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मोको कहाँ ढूँढे बंदे ------------- सब स्वाँसों की स्वाँस में॥

प्रश्न (i) इस काव्यांश में 'मैं' और 'तेरे' शब्द क्रमशः किसके लिए प्रयुक्त हुए हैं?

प्रश्न (ii) इस पद में कबीर क्या कहना चाहते हैं?

प्रश्न (iii) 'खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं' - से कवि का क्या आशय है?

Scanned with CamScanner